Chapter-6

छठा अध्याय - मानवीय मूल्य संवेदना

मानवीय मूल्य संवेदना

इस अध्याय में मिश्र जी का मानवीय मूल्य संवेदना के रूप को लिया गया है। जिस प्रकार मिश्र जी का समाजिक चेतना को स्पष्ट किया गया है। उसी प्रकार उनका मानवीय संवेदना के बिंदुओं को भी स्पष्ट किया गया है। वस्तुत: समाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का अन्योन्याश्रम सम्बन्ध है। समाजिक विसंगतियों के परिणाम स्वरूप कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। जो मानवीय संवेदना को उभारती है। मिश्र जी स्वयं मानवीय संवेदना के कवि है अत: उन्होने जहां कही संवेदनीय तत्वों को देखा, उसका अपने कथा-साहित्य में निरूपण किया है क्योंकि आज भौतिकीवादी दुनिया में सभी किसी न किसी स्वार्थ में लिप्त रहते है। उनके अंदर की चेतना लुप्त हो गयी है। कोई किसी के प्रति दया, सहानुभूति, सहिष्णुता, सामंजस्य का व्यवहार नहीं करता है बल्कि परस्पर ईर्षा, द्वेष, वैमनस्य का भाव रखते है। मानवीयता तो केवल नाममात्र रह गयी है। परन्तु फिर भी कुछ ऐसा है, शेष बाकी है, जिसके आधार पर यह दुनिया चलती है, संबंध व्याप्त रहते है। लोग एक दूसरे से जुड़े है। उन्हीं मानवता वाले सम्बन्धों की तरफ ही मिश्र जी पाठको का ध्यान आकर्षित करना चाहते है ताकि उनकी सोयी हुई चेतना जाग्रत हो सके। उन्हीं तत्वों को यहां पर विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है औदार्य, नीति परायणता, परदुख-कातरता, सत्य के प्रति निष्ठा तथा प्रेम आदि मूल्यों का जो ह्रास होता दिखायी पड़ रहा है। इससे मिश्र जी अत्यन्त व्यथित है उन्होने अपनी व्यथा को अनेक रूपों में व्यक्त किया है। वे चाहते है कि समाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन व व्यवहार समाज में बराबर होता रहे। अत: इसके कथा-साहित्य में मूल्य चिंता भी महत्व पूर्ण समस्या है।

मानवीय चेतना के अर्न्तगत समाज में व्यापत ऐसी मानवता जो मन को छू देने वाली मानवीय संवेदना से जुड़ी हो। मानवीय मूल्यों को संवेदनीय रूप से साहित्य में दृष्टि गोचर किया जाता है। हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचन्द ने इसे उच्च शिखर पर पहुंचाने की शुरूआत की, लेकिन उनकी यह परम्परा ग्रामीण परिवेश तक ही सीमित रही लेकिन मिश्र जी ने नगर और गांव दोनों को अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है। दोनों ही स्तर के शोषक व शोषित के मानसिक स्थितियों को बताया है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में राजनीतिक वह समाजिक वर्ग संघर्ष

को विशेष रूप से दृष्टांत किया है । इस प्रकार शोषण के विरूद्ध उन्होंने वैचारिक जागरण करके एक नयी शुरूआत की है ।

मिश्र जी का अधिकांश कथा-साहित्य यथार्थ भाव-भूमि पर रचा गया है । यही कारण है उनके साहित्य में संपूर्ण समाज की ऊंची नीची भूमियों का प्रतिबिम्ब है । उन्होंने जो कुछ देखा, भोगा, उसको देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठता था ।

एक परिवार की औरत के पिटने और तरह तरह से ताड़ित होने का मामला क्या केवल इसका मामला होता है । यदि ऐसा होता तो हमारा खून क्यों खौलता उस औरत की पीड़ा से हम क्यों छटपटाते । 1

एक ही मकान में ऊपर के तल पर बहू की पिटाई हो रही हो, उसे भूखा रखा जा रहा हो और दिन-रात अमानवीय कौ-आरोर हो रहा हो तो नीचे के लोग कैसे जी सकते है । आखिर हम मनुष्य है, आपके अत्याचारों से हम चुप रहते है किन्तु हमारा हृदय तो चीखता है । इस लड़के के जरिये हम खाना नहीं भेजते, यह खुद ही दे आता है । उस औरत से न जाने इसे क्या लगाव महसूस होता है । 2

मानव के भीतर मानवता होने के कारण ही वह अत्याचार को देखकर संत्रास हो उठता है । तथा उनके मन में विरोध करने की ललक उठती है । एक बूढ़ा व्यक्ति जो चार दिनों का भूखा था वह धूल में से कंकड़ छानकर धूल फांक रहा था । तभी राह चलते एक व्यक्ति उसे देखकर उसे लगा कि उसी का बूढ़ा बाप बैठा धूल फांक रहा है । वह दहल गया । "मेरे साथ चलो बाबा" कह कर उसने बूढ़े की बांह थाम ली । पास के ढाबे पर ले जाकर खाना खिलाया । 3

इस प्रकार के शोषणों को देखकर मानव हृदय द्रवित हुए बगैर नहीं रह सकता। लेकिन आधुनिक काल में जीवन-मूल्य तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे है । स्वतंत्र्योत्तर काल में तो मूल्य परिवर्तन की प्रक्रिया और अधिक गतिशील हो गई है । आज समाज में स्थिति यह है कि हमारी पुरातन परम्परायें, मान्यताएं, आदर्श और मूल्य विघटित हो रहे है और इनके स्थान पर नवीन मूल्यों का आविर्भाव हो रहा है । आज भारतीय समाज में परम्परित एवं नवीन मूल्यों का संघर्ष प्रबल रूप से अनुभव किया जा रहा है ।

मूल्य और मानव का गहन और सहज सम्बन्ध है । मानव के लिये किसी वस्तु का मूल्यातत्त्म प्रतीत होना भी उस वस्तु के मूल्यमत होने का प्रमाण है । मूल्य बोध वैयक्तिक अनुभूति के आधार पर निर्धारित एवं संशोधित होता रहता है तथा उससे सम्बन्धित होता रहता है । प्रत्येक अवस्था में अनुभूति वैयक्तिक ही होती है । जो वस्तु मानव मन में प्रसाद, प्रेरणा, सार्थकता, आपूर्ति तथा परितोष की अनुभूति उत्पन्न करने में सक्षम होती है । वहीं मूल्यवान प्रतीत होने लगती है। अत: एवं यह कहा जा सकता है कि मानवीय संवेदनाओं के अभाव में मूल्य की कल्पना करना निरर्थक है । मानव सत्ता मूल्य की सिद्धि के लिये परम आवश्यक है । सभी मूल्य मानव मूल्य है चाहे वे नैतिक मूल्य हो, चाहे सौंदर्य परक मूल्य या कोई और पर विशेष अर्थ में मानव मूल्यों का तात्पर्य उन मूल्यों से है जो मानव के आन्तरिक सहज स्वरूप के सबसे निकट प्रतीत होते है । और उसके गुणों के प्रकाशक होते है । उसके संवेदनात्मक व्यक्तित्व से सबसे अधिक सीधे और गहन रूप से सम्बद्ध है । उनकी विशेषता इसी में है कि उनमें मानवीय संवेदनाओं की युक्त और उदार स्वीकृति है । जीवन में उन मूल्यों की प्रतिष्ठा का अर्थ मानवता और मानवीयता की प्रतिष्ठा है । इसके बिना मानव व्यक्ति निरर्थक है । 4

हमारे समाजिक सम्बन्धों में बहुत से पुराने मूल्य टूट रहे है । पुराने ढंग से रहने-सहने और जीने की पद्धतियों में फेरफार हुए है । विश्व का जीवन शांति और हिंसा सह-अस्तित्व और संदेह की मिली-जुली घाटियों से गुजर रहा है । शांति और सहअस्तित्व का प्रकाश निकलता है तो हिंसा और भय उसे निगल देता है । किन्तु आदर्श वादी कलाकार इस अंधकार को चीर कर प्रकाश की किरण निकालना चाहता है । अंधकार ने ज्योति के लबादे को जब चाहा, झटक कर फेंक दिया । इसलिये आज का कलाकार अंधकार को चीरकर उसके भीतर से जो ज्योति निकालता है उसी को सत्य मानता है । वही स्थायी और विश्वास का केन्द्र है । उपन्यास कार जीवन के खोखलेपन को, रिक्तता को दिखाता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह ऐसा ही जीवन पसंद करता है बल्कि वह ऐसे जीवन की निस्सारता को खोलकर खोखले जीवन पर आघात करता है । जिस प्रकार साहित्यक चेतना को समाज में उभारने का प्रयत्न किया जाता है उसी प्रकार कभी कभी सृजन

प्रक्रिया का उद्देश्य मानवीय संवेदना को उभारने का भी होता है । मिश्र जी स्वयं लिखते है - साहित्य का मूल संबध मानव की संवेदना से है । संवेदना के बिना साहित्य नहीं बनता, चाहे उसमें बुद्धिवाद का कितना भी अहापोह क्यों न हो, दर्शन की नयी-नयी भंगिमा क्यों न हो । बुद्धि, दर्शन, चिन्तन, ज्ञान, विज्ञान सबको पहले जीवन में आत्म सात होना पड़ता है । आत्म-सात होकर मानव संवेदना का अंग बनना पड़ता है । तभी शक्तिशाली साहित्य की सृष्टि होती है । 5 अस्तु साहित्य के मूल आधार के रूप में मानवीय संवेदना अत्याधिक महत्वपूर्ण है । साहित्य में जो समाजिक परिवर्तन आदि ब्राह्य जगत एवं समाज की विभिन्न घटनाओं का समावेश होता है । वह मानवीय संवेदना के माध्यम से ही साहित्य में होता है । इस प्रक्रिया के लिये मिश्र जी लिखते है - साहित्य सर्जन की प्रक्रिया इतनी जटिल और भीतरी होती है कि बाहर की घटनाओं, अविकारों और तथ्यों से एकाएक प्रभावित नहीं होती । वह जीवन से प्रभावित होती है और जीवन बाहय घटनाओं, तथ्यों और परिस्थितियों से प्रभावित होता है । साहित्य का सम्बन्ध मुलत: मानवीय संवेदना और अंतरसत्यों से होता है । 6

प्रत्येक युग की अपनी जीवन दृष्टि होती है । जो युगीन परिस्थितियों से उद्भूता एवं परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होती है । इन्हें क्रमशः युगीन तथा शाश्वत मूल्य माना जाता है । इससे प्रकट है कि जीवन मूल्यों की अर्थवत्ता प्राय: युग सापेक्ष होती है । आज के युग में असंतोष, विद्रोह, संशय, तनाव, अनास्था सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है ।

मानवीय मूल्यों की टकराहट के फलस्वरूप साम्प्रदायिक, समाजिक, मानसिकता अंतर द्वंद्वो, अंत: विरोधों तथा अंतसाधनों की भावताओं व विकृतियों से ग्रस्त होती चली जा रही है । जन समाज में दिन-प्रतिदिन होने वाले अपराधों, दुर्व्यसनों, प्रतिस्पर्द्धाओं, भ्रष्ट्राचारों व संघर्ष में अभिवृद्धि, निवास व वस्त्रों का अभाव, जनसंख्या आदि के बढ़ने के साथ जैसी संभावनों व विसंगतियों के कारण मानसिक द्वंद्वों व संघर्षों की स्थिति उभरती गयी है ।

आज आधुनिक युग में जीवन तीव्र गति से परिवर्तित होता जा रहा है। उसे सभी लोग महसूस करते है। पिछले जो भी आदर्श, मूल्य और मान्यतायें थे वे या तो समाप्त हो रहे है या उनकी जगह नये मूल्य आ रहे है। अथवा पुराने मूल्य युगानुकूल परिवर्तित होकर परिस्कृत रूप में सामने आ रहे है। नये मूल्यों की प्रतिष्ठा से पुरानी पीढ़ी तथा नई पीढ़ी में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई है। "दूसरे घर" उप0 में वर्मा जी स्वंय तो दूसरी, तीसरी शादी करते है और बच्चे पैदा करते जाते है। और जब उसका छोटा भाई अन्तर्जातीय, अपनी पसन्द का विवाह करना चाहता है तो वे उसका विरोध करते है यहां तक उनको घर से निकाल देते है। दूसरों की जिन्दगी बर्बाद करने के बजाय यदि वह उसे अपनाते है। तो उसमें कोई बुराई नहीं है। आज आधुनिक शिक्षा की वजह से भी नयी पीढ़ी के लोग पुराने मुल्यों को नहीं स्वीकारते है वरन् वे अपने बनाये हुए उसलों पर चलना चाहते है जिसकों पुरानी पीढ़ी वर्ग के लोगों के बीच टकराह की स्थिति होती है। सभी परिवार टूटते है। नैतिकता का हास होता है। "शेष यात्रा" कहानी में युवक वर्ग अपने स्वार्थ सुख के लिये अपने माता-पिता को छोड़कर अपने सिरे से जीवन जीने के लिये स्टेटस चले जाते है।

अर्थाभाव के कारण भी व्यक्ति के सभी नैतिक मूल्यों का हास होने लगता है। अर्थ भी मूल्य के हास व विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। इससे विचलित होकर व्यक्ति समाज को विकृत करने के लिये तैयार होता है। ऐसे लोगों की मजबुरी का फायदा उठाना पूंजीपति को शोषण करने का मौका मिलता है। जब गांव में भूख, दरिद्रता की स्थिति आती है तो उस समय व्यक्ति अपना सब कुछ बेचने के लिये मजबुर हो जाता है। गांव की मातायें अपने तन का छल्ला-छल्ला उतार कर बेटी के तन की शोभा बढ़ाने की जगह चौधरी की तिजोरी में दफना रही है। "सूखा हुआ तालाब" उप0 में चेनइया भी गरीबी के कारण अपना देह-व्यापार मजबुर होकर करती है।

नई आजादी ने कुछ दिन तक तो अपने पूर्व संकल्प को याद रखा पर धीरे-धीरे उसकी स्मृति धूमिल पड़ती गई। देश के नेताओं ने घूम-घूमकर यह अच्छी तरह जान लिया था कि गरीबी और मुफलिसी की जड़े समाज में इतनी गहरी जम चुकी है।

कि उससे छुटकारा पाया नहीं जा सकता । लोगों को काबु में रख लिया जाना ज्यादा आसान कम है । पैसे से हर चीज खरीदी जा सकती है । हर सुविधा और हर उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है । सीमित आय से जिंदगी के तमाम सुख सुविधाएं प्राप्त नहीं की जा सकती है । प्रिंसीपल का प्रिय बनने के लिये लोग एक दूसरे की शिकायत किया करते है लोग मेरी भी शिकायत करते है, मुझसे औरों की शिकायत नहीं हो पाती इसलिये दूसरे लोग सुर्खरू बने रह जाते है और में बार बार सफाई देने के बावजूद जहां का तहां यानी बुद्दू बना रह जाता हूं और तो और प्रिंसीपल ने चाहा है कि मैं डा0 सूर्यकुमार के एक मुकदमे में झूठी गवाही दूं । 8 इसके लिये चमचागिरी, रिश्वत खोरी, जी-हजूरी करना आदि चापलूसी जैसे कार्य करके, उससे वांछित अर्थ लाभ प्राप्त करने के लिये पारस्परिक आदान-प्रदान का सिलसिला चलने लगा । जिससे मूल्यों का विघटन होने लगा । और बेकारी भी बढ़ती चली गयी । शोषण का सिलसिला भी बढ़ता चला गया। हर कोई अपने से कमजोर वर्ग का शोषण अपनी बढ़ोत्तरी के लिये करता जाता है । कमजोर वर्ग नैतिकता, आदर्शों को लेकर चलते हुए अपना विनाश स्वीकारते जाते है । मेले की तैयारी के लिये किसानों से लगान और कर्जा वसूल कर रहा था । कोई रियायत नहीं । इसलिये किसानों पर सख्ती बरती जा रही थी । मारपीट, गाली, धूप में मुर्गा बनाना आदि सारी क्रियाएं हो रही थी । किसानों में तहलका मच गया था, हिदायत थी कि जो कोई भागेगा, उसका घर उखाड़ कर फेंक दिया जायेगा । उसके खेत की फसल कटवा ली जायेगी । किसान हाय हाय कर रहे थे । 9

रोजी रोटी बड़ी चीज है भाई, देश के नब्बे प्रतिशत लोग वहां करते है तो तुम्हें करने में क्या हर्ज था । लोग अपनी उन्नति और यश के लिये करते है तुम्हें तो अपनी रोटी के लिये करना था । नैतिकता और मूल्य लेकर चाटोगे क्या ?

इसी मुहल्ले में चारों और देखों कैसी कैसी कोठियां खड़ी हंस रही है । ये सब मूल्यों से बनी है ? डा0 सूर्य कुमार का इतना बड़ा राजपाट मूल्यों से बना है । कचहरी के पेशकार की कोठी को, एम0 पी0 साहब के वैभव को, वकील साहब का ठाठ-बाट, इंजीनियर के महल को और कितनों के नाम गिनाउं क्या ये सब मूल्यों

से बने है । इस वैभव के स्तर स्तर को उधेड़कर देखो, पर्त हर पर्त पाप खुलता जायेगा । पाप ही इनके वैभव के महत्व की नीवें और सीमेंट है । और मेरे तुम्हारे पास क्या है ? 10

इसी नैतिकता, मूल्य के कारण रामविलास को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है । इस तरह से जमींदार वर्ग व पूंजीपती वर्ग मानवता का ढोंग ओढ़े गरीब निम्न वर्ग पर अत्याचार करता ही चला जाता है ।

दहेज के बिना ससुराल में जो गति होती है । उसको देखकर मन भर उठता है । उमा का बीमार शरीर कसाई के घर में पड़ी गाय की तरह हलदल कांप रहा था । वह जोर से फफक पड़ी, आप नहीं ले चलेंगें तो डूब मरूंगी । 11

आये दिन होने वाले नारी पर अत्याचारों को देखकर तो मन दहल उठता है । फिर पता नहीं लड़के वालो को ऐसी क्रिया करते हुए कोई प्रतिक्रिया नहीं होती वे केवल भौतिक सुख साधनों के लिये दुर्बल मासुम अबला पर अत्याचार करते है। परन्तु फिर भी ऐसे लोग है जो दूसरों के दुख को देखकर दुखी होते है । जो दूसरों के लिये सोचता है । यहां तो "सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना कब की मर खिला गयी । "अपने लोग" उप0 में एक गरीब बुड्ढा डॉक्टर के पास अपना तीन-चार वर्षीय बीमार पोते को लेकर गिड़-गिड़ा रहा था तथा उसको देखने की याचना कर रहा था लेकिन डॉक्टर सूर्य बिना फीस के मरीजों की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखते है । तभी यह देखकर प्रमोद के मन में करूणा भर आयी और उसने अपनी जेब से कुछ रूपये निकाल कर दिये तथा अन्य लोगों को भी थोड़ी थोड़ी मदद करने के लिये सम्बोधित किया ताकि गरीब व्यक्ति की जान बच सकें । लेकिन इतनी सब व्यवस्था करने के बाद बच्चा बच नहीं पाता है । उसकी हालत-बहुत गंभीर थी । आज कल के डॉक्टरों के मन में करूणा, संवेदना नहीं रही । उनका मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना है । वे अपने बंग्ले, मोटर कार बढ़ाते जा रहे है लेकिन मानवीय रिश्ते से दूर होते जा रहें है । वे अपने ऐशोआराम के लिये किसी गरीब की जान की कोई परवाह नहीं करते है । इसी तरह "मुर्दा मैदान" में भोला नामक एक लड़का सड़क पार करते समय मिनिस्टर की कार के नीचे कुचला जाता है । पुलिस वाला गाली देता हुआ भोला के पास आया । देखा कि लड़के के सिर से खून बह रहा है और वह बेहोश हो गया

है । उस पर पद प्रहार करने की लालसा सिपाही के मन में ही रह गयी । कुछ लोग कह रहे हैं कि यह अभी जिन्दा है । इसे अस्पताल पहुंचाया जाये तो जी सकता है । इसके मां-बाप को खबर भी की जा सकती है - किन्तु कौन करे । अभी तो इसकी पुलिस जांच की खानापूर्ति होगी । यह जांच भी मंत्री जी की गाड़ी निकल जाने के बाद ही होगी । तब तक यह गरीब बचेगा भी क्या ? 12

ज्यों-ज्यों व्यक्ति भौतिकी सुख सुविधाओं की तरफ बढ़ता जा रहा है । उसका जीवन निष्क्रिय संठता सा होता जा रहा है । मिश्र जी ऐसा ठूंठे सा जीवन को पढ़ते हुए देखकर गहरी चिन्ता को अनुभव करते है । जब समाज में अत्याचार हो रहा हो शोषित वर्ग ज्यादा पीड़ित हो रहा हो तो यह सब देखकर मनुष्य का भावुक हृदय विचलित हुए बगैर नहीं रह सकता । मिश्र जी इसी प्रकार के कवि है । वह समाज के इन तत्वों से जल्दी ही प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकते । उनके भावुक हृदय के साथ साथ उनका मस्तिष्क भी प्रभावित होता है । विचारों का उहापोह उनके भीतर घुमड़ता रहता है । उसी को माध्यम बनाकर वे उसे साहित्य में प्रस्तुत करते है । मानवीय करुणा वह मुल तत्व है जो उनकी रचनाओं में समाया हुआ है ।

कुछ लोग ऐसे भी होते है जो दूसरों की मदद निस्वार्थ भावना से करते है । उनको परोपकार करने में एक सुख, शांति, सकुन की प्राप्ति होती है । ये शहर में तो बहुत कम आते है, ये तो हमेशा देहात में ही रहते है । किसानों और मजदूरों के बीच रहते है, उनके अधिकारों के लिये लड़ते है, उन्हे जगाते है पढ़ाते-लिखाते है- शहर में भी आते है तो मजदूरों के बीच ही व्यस्त रहते है, इन्हे न अखबारों में नाम छपाने से मतलब, न चुनाव लड़ने से मतलब, न खाली बहस करने से मतलब । वे मार्क्सवाद को जनता में जीवित करना चाहते है । 13

"अतीत का विष" कहानी में सुभाष एक अभिशाप्त समाज में जीवन-साथी चुनकर उससे विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श रखता है । आदर्शवादी युवकों को एक आदर्श की स्थापना के लिये ही नहीं, सच्ची शांति और सुख के लिये इन्हें अपनाना चाहिये । 14

सुभाष एक वेश्या को अपनाकर समाज में एक उद्धार का कार्य करता है । लेकिन वह कहता है । तुम उद्धार-वुद्धार की बात करके मेरा सुख कम कर देना चाहती हो, मैंने तुम्हें प्यार किया है, उद्धार नहीं, मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया है । अपने आनंद के लिये तुम्हें पाया है । न जाने क्यों तुम्हें देखते ही मेरी अंतरात्मा बोल उठी थी - यही है वह स्त्री जो तुम्हारे लिये है । 15

"अकेली वह" कहानी में हिन्दुस्तान के बंटवारे के समय एक लड़की के मां-बहन, भाई मारे जाते है । और उसका पिता उस लड़की को रिफ्यूजी कैंप में छोड़कर चला जाता है । उस कैंप के मैनेजर जिसका नाम विनोद शुक्ल था । वे किसी सरकारी नौकरी में अच्छे पद पर थे । बहुत अच्छे इंसान थे । उनकी पत्नी भी बहुत भली थी । उन्होंने उसे अपने बच्चों के समान ही एक और बच्चा मान लिया, बड़े प्यार से रखा । बी० ए० तक पढ़ाया । बार बार सोचती कैसी है दुनिया ? अपना बाप तो छोड़कर चला गया और दूसरे के बाप ने उसे अपनी बेटी की तरह पाला, पोसा, पढ़ाया-लिखाया और एक दिन शादी भी कर दी । 16

इस प्रकार से कुछ लोग ऐसे होते है । जो दूसरों के दुख को अपना बना कर आत्मीय बन जाते है । "अपने लिये" कहानी में एक गरीब लड़की की बिना दहेज के अच्छे घर में शादी करा देते है । लेकिन लड़की को बाद में मालुम होता है कि उसका पति पागल है । वह उसका विरोध करती हुई कहती है कि गरीब लड़की की अपनी बिसात क्या ? उसे बलि देना ही चाहिये । गरीब बाप को आसानी से धोखे में रखा जा सकता है और गरीबी में अपनाता हुआ बाप यदि इस सत्य को जान भी ले तो भी क्या फरक पड़ता है वह आसानी से लड़की दे सकता है ।" वह सोचती है एक पागल व्यक्ति के साथ जिंदगी जीने से तो मर जाना बेहतर है । लेकिन जब रात को उसके पति के ललाट से बहते हुए खून को देखकर उसके मन में उसके पति करुणा उमड़ने लगती है । आखिर मेरी ही तरह इस आदमी का भी क्या दोष है ? कौन चाहता है पागल होना । लोग पागल बना देते है । क्या मैं इन्हें असहाय छोड़ जाऊं । मेरे भाग जाने से क्या वह व्यक्ति और बरबाद नहीं हो जायेगा ? और भागने पर मुझे क्या मिलेगा मौत के सिवाय ? नहीं मैं कहीं नहीं जाऊंगी । 17

मिश्र जी ने यहां नारी के अंदर में दबे हुए मानवीय मूल्यों को उद्‌घाटित करके नारी के वास्तविक स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की है । जिस व्यक्ति के भीतर यदि कोई संवेदना बाकी होती है तो वह उसे कुछ सोचने पर मजबूर कर देती है । व्यक्ति को केवल दिमाग से ही नहीं वरन् दिल से भी काम लेना चाहिये । क्योंकि हृदय के बीच ही कहीं संवेदना छिपी रहती है । बेटी सबकी बेटी होती है, ठीक कह रहा है दीनदयाल, तूने बेटी की कसम दिलाई है, मुझे सरथा बेटी की कसम दिलाई है, बेटी सबकी बेटी है- हां, तेरे बाद उसका क्या होगा ? जा फिर तू छूट गया । सरथा बेटी के भाग से छूट गया फिर मेरी आग जलती हुई मुझे चबायेगी - मैं किसी लड़की का सुहाग नहीं छीन सकता, किसी का सुख नहीं लूट सकता । मैं जानता हूं दरद क्या होता है, अभाग्य क्या होता है, नहीं मैं किसी लड़की का भाग्य और सुख नहीं छीन सकता । 18

इन पंक्तियों में बिरजू जैसे खुनी, क्रूरी व्यक्ति के हृदय में भी परिवर्तन दिखाया गया है । जो दीन दयाल जैसे बेईमान व्यक्ति का खून का प्यासा था लेकिन फिर भी उसकी बेटी के रिश्ते की बात करते जानकर उसका हृदय भावुक हो उठता है । कि यदि वह इसको मार देगा तो उसकी बेटी की जिंदगी बर्बाद हो जायेगी, यह सोचकर वह उसे छोड़ देता है ।

"बच्चा जी नहीं मानता है मुझे ले चल दौलतवा "ससुरे के यहां । आ सूतड बाबा, जाने दीजिये उसे, मर जाये तो मर जाये, नहीं बचवा, मेरा जी नहीं मानता, दोस्त हो चाहे दुश्मन, मंतर जानने वाले का फरक होता है कि वह सबकी सेवा करें । बच्चा । उसकी चाल खराब है तो मरने के और भी बहुत से तरीके निकल आयेगें । मैं मंतर जानते हुए यह पाप क्यों लूं ? बच्चा मंतर जान बचाने के लिये होते है । वह चाहे किसी की जान हो, जान लेने के लिये नहीं होते । 19

कुछ लोगों में परोपकार की भावना उनके मूल में होती है । चाहे दूसरे लोग उनसे कितनी ही दुश्मनी क्यों नहीं करते है । फिर भी उनके हृदय में मानवता का अंश रहता है । दूसरे का दुख को अपना समझते है ।

"पड़ोसिन" क० में भी जिन लोगों को असभ्य माना जाता है । उनसे शिक्षित वर्ग बात करने में भी झिझकता है । लेकिन वक्त आने पर ये ही लोग

...244..

काम आते है । इसमें मुन्नी के बीमार पड़ने पर घर में दूसरे कोई नहीं होने पर वे असभ्य लोग रोने-चिल्लाने की आवाज सुनकर दौड़े चले आते है । और डांटते हुए कहते है" मास्टर जी, यह क्या तमाशा है कि तुम लोग हम लोगों को पराया समझता है । पड़ोस में है हम, सुख-दुख में काम नहीं आयेगा तो पड़ोसी किस बात का ? 20 फिर वे लोग डॉक्टर को बुलाकर दौड़-धूम करके मुन्नी को स्वस्थ कर ही देते है । इन मूल्यों को देखकर भी कभी लगता है । मूल्य क्या चीज है । क्या है मानवता ? क्या है मूल्य ? क्या कहीं कुछ नहीं बचा है ? बचा है । केवल सुविधापरक समझौता । जैराम जिसे हम अपना मित्र ही नहीं बल्कि रूढ़ियो, अंध-विश्वासों के विरूद्ध मानवता की लड़ाई लड़ने वाला एक इन्सान समझते थे केवल धोखा था या सुविधापरक समझौता बाद उसे तोड़ने में सफल हो गया । तब तो कहीं कुछ भी विश्वसनीय नहीं कहीं कुछ भी अटूट नहीं, कहीं कुछ भी मूल्य नहीं, आत्मीय नहीं । 21

मूल्य तो एक समाजिक स्वीकृति है । धीरे धीरे नयी पीढ़ी की पुरानी पीढ़ी के प्रति श्रद्धा टूटती जा रही है और यह टूटना एक समाजिक स्वीकृति प्राप्त करता जा रहा है । विश्वविधालय में हड़ताले हड़ताले, अध्यापकों और अधिकारियों का घिराव । पहले छात्र फेल होने पर मुंह छिपाते घूमते थे अब माला वाला पहन कर हीरो बनकर हड़ताल पर बैठते है और इसे समाजिक रूप से एक गौरव समझते है अब न उन्हें, न देखने वालों को कुछ विचित्र लगता वे कहां है चिरंतन मूल्य । 22

इसी तरह शिक्षा जैसे ज्ञान के क्षेत्र में भी इसमें बदलाव आया है । आज शिक्षा का मूल्य ही नहीं रहा है । पहले जैसी शिक्षा भी नहीं रही है । दोनों पीढ़ियों के अंतराल मूल्यों भी परिवर्तन आता रहता है । करूणा के दृश्य जैसे किसी के मौत का होना, या ऐक्सीडेंट आदि ऐसे दृश्य देखकर तो व्यक्ति भीतर तक दहल उठता है । "अतुल के चारों ओर अस्पताल की गंध छटपटाने लगी- कुछ ही दिन पहले उसने दुर्घटना में अपने एक मित्र की मृत्यु देखी थी । देखते देखते वह उससे छिन गया था , एक अथाह रिक्तता छोड़कर । अतुल का भीतर मृत्यु गन्धा अस्पताल फट पड़ा था । 23

कुत्ते कहानी में भी छवि को कुत्ते ने काट लिया था जिससे उसकी मृत्यु हो गयी थी । निकट का संपर्क होने के कारण आत्मीयता या सहानुभुति का होना स्वाभाविक ही

है । छवि की कातर वाणी, जीने की इच्छा लिये बिदा होने का आभास और अपने अपराधों के लिये क्षमा याचना छवि के परिवार वालों का हबसना, छाती पिटना, फिर मां की आंखों का सुन्न होजाना ये सभी कुछ मुझ में भर गया । 24

इस प्रकार मौत जैसे दृश्यों को देखकर करूणा से द्रवित हो उठना स्वाभाविक है । इनके अलावा भी "खाली घर", गीतू, बेला मर गयी, आखिरी चिठ्ठी, मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो," आदि ऐसी कहानियां है । जो मानव संवेदना को द्रवित कर उठती है । इन कहानियों के पात्रों में रही हुई गहरी जिजीविषा भीतर तक हिला देती है । पाठक गण पढ़ते पढ़ते भावुक हो उठता है । दुनिया यों ही लोगों पर लांछन लगाया करती है । वह तो मुझे बड़ा अच्छा आदमी लगता है । कोई है जो यह एक पागल को अपने यहां शरण देता हो ? लोग तो मजा लेने के लिये उमेश जी को पीट रहे थे । एक से एक घटिया लोग शरीफ बनकर पिटाई में शामिल हो गये थे लेकिन बी0 लाल आया और उन्हें बचाकर ले गया । 25

किसी योग्य आदमी को यदि राजनीति कुट नीतिज्ञ के कारण अयोग्य ठहराया जाता है । तो इसका यह मतलब नहीं कि समाज उससे सहानुभुति करने के स्थान पर उन्हें लांछित व तिरस्कृत करें ।

अपनेपन का घेरा कितना खोखला लेकिन बोझिल है, कितना उबाउ और कुत्स्य है । रामविलास की आंखों में सचमुच दर्द है । मानों उसके जीवन का स्थायी दर्द ही दूसरे का दर्द पाकर और गहरा हो गया है । वह कुछ बोलता नहीं, चुपचाप सामने आकर बैठ जाता है और पूछता है, "मेरे लायक कोई सेवा ? उसके इस पूछने में एक सच्ची तड़प होती है । 26

कोई दुख या वेदना होने के कारण दूसरे लोग सहानुभुति जताने के लिये आते है । लेकिन वे केवल औपचारिकता का भाव प्रदर्शित करते है। किसी के साथ यदि उनके दुख में सहानुभुति जताये तो उससे उसका दुख उतर तो नहीं जाता है वरन् दुख सहन करने की उसमें हिम्मत, बल जरुर आ जाता है । मिश्र जी को वर्तमान युग में औपचारिकता के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर गहरी चिंता होती ही कुछ लोग सत्य के प्रति मूल्यों निष्ठा का नहीं छोड़ते है । चाहे इसके लिये उनको

...246...

कितनी ही हानि क्यों नहीं उठानी पड़े वह डगमगाते नहीं है वरन् स्थिरता से उनका मुकाबला करते है ।

नहीं, वह इनके पाप में शामिल नहीं होगा, अपनी आत्मा की आवाज को चुप करेगा । लेकिन घर के इन अभावों का क्या होगा । क्या होगा - क्या होगा, उसे चाहिये कि कुछ पैसे इकट्ठे कर ले, दुनिया भर के न्याय और सत्य का ठेका लिये बैठा है, जब घर में अकाल पड़ेगा, तब कोई भी सत्य और न्याय सहायता के लिये नहीं आयेगा, केवल पैसा ही साथी होगा, हां पैसा खीचने के लिये भी पैसे चाहिये । 27

"जल टूटता हुआ" उप0 में सतीश के सामने कितनी ही मुसीबतें आती है । लेकिन वह मूल्यों का त्याग नहीं करता है । बल्कि धीरज के साथ उसका सामना करते है ।

"क्या आप चाहते है कि नीचता की निम्नतम सीमा तक पहुंचकर यह बयान जारी करूं कि खुद लड़की लड़के को फांसना चाहती थी और उसके नहीं फंसने पर उसने इसे केस बना दिया । मेरे लिये आदमी अपने इसे केस बना दिया । मेरे लिये आदमी से बड़ी राजनीति नहीं है और तिस पर यह एक निरीह लड़की का केस है । इस केस के साथ उसका नाम भी प्रच्चारित किया जायेगा । आपके राजनीतिक खेल में उस बेचारी का जीवन किस तरह बर्बाद हो जायेगा । 28

कुछ लोग अपनी चिन्ता न करते हुए दूसरे की इज्जत को कलंकित होने से बचाने की कोशिश करते है । वे निरापराध होने वाले साथ देकर उन्हें उबारते है। वे ही सच्चे अर्थों में मानवीय होते है । "दूसरा घर" उप0 में भी कमलेश की बहिन शोभा को दंगे के समय मुसलमान उठा कर गये थे । फिर कोई शरीफ आदमी उसे सुरक्षित छोड़ भी आये थे । किन्तु इस घटना के कारण शोभा की शादी में लड़के वाले उसको इस रूप में अस्वीकार करते है । वे उसे कलंकित करते व समझते है । लेकिन उनमें एक दोस्त विनोद जो अविवाहित था, वह उन्हें अपमानित होता देखकर सहन नहीं कर सकता, वह उसके साथ शादी करने को तैयार हो जाता है । इस प्रकार उसका दहेज भी बच जाता है और दोस्ती रिश्ते में बदल जाती है । एक नया मानवीय सम्बन्ध स्थापित होता है ।

इस उप0 में फेंकू जो कि बहुत ही गरीब व्यक्ति है । वह किराया न देने

की स्थिति में उसे निकाल दिया जाता है । तब शंकर उसको अपने बरामदे में रहने के लिये कहता है । कभी कभी खाने वगैरह की भी व्यवस्था कर देता है । आप देवता है शंकर बाबू, भगवान आपको सुखी रखे। देवता। शंकर हंसा । "अरे मैं देवता कहां से हो गया फेंकू, मुझे आदमी ही बना रहने दो ।"

शंकर बाबू जो दूसरों का दुख दरद समझता है वही देवता है । जो नहीं समझता वही राक्षस है" । 29

लेकिन आज युग के साथ साथ समाज तथा समाज में रहने वाले लोग भी परिवर्तित हो रहे है । आज के लोग अपने स्वार्थ में लिप्त है कि मानवीयता का हास ही हो गया है । और वे मानवीय रिश्ते, नाते, व्यवहार, संवेदना, मूल्य आदि को ठुकरा देते है । वे भौतिक सुख लिप्सा के लिये येन केन प्रकरेण अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते है । ऐसे ही "बिना दरवाजे का मकान" उप0 में दीपा जिस घर में काम करती थी । उस घर में एक बहू का जला दिया जाता है । दीपा यह सब देखकर बहुत ही संवेदनीय हो जाती है । और सोचती है। ऐसे कसाई लोगों को तो सजा अवश्य मिलनी चाहिये । इसके लिये पुलिस को गवाही देने को भी तैयार होती है । लेकिन उस घर की मालकिन उसके हाथ में सात सौ रूपये दे देती है । दीपा को मकान बनवाने के लिये पैसो की जरूरत तो थी ही । इसके लिये वह रूपये लेकर गवाही उन्हीं के पक्ष में ही देती है ।

हाय, स्वार्थ आदमी का तेज कितना मार देता है । सात सौ रूपयों ने मेरा सारा तेज पी लिया और मैंने पुलिस के आगे ऐसी गवाही दी कि साबित हो गया कि राधा स्टोव की आग लगने से मरी है । ये कसाई सब बच गये लेकिन मैं आज तक अपनी नजरों में गिरी हुई हूं । कभी कभी अपने को डॉंटती हूं कि तूने कोई बुरा नहीं किया । तू राधा को जिन्दा तो कर नहीं सकती थी तूने जो किया उससे उन कसाइयों का ही नहीं अपना भी भला किया । अपना भला कौन नहीं देखता । जब बड़े बड़े धरमात्मा बनने वाले लोग यही सब कर रहे है तो तू ही क्यों हरिसचन्द्र बनी हुई है । जीने के लिये दूसरों को थोड़ा बहुत ठगना भी पड़ता है । 30

"तो स्मगलिंग करते है चौपड़ा साहब रोज दो-दो पैसे के लिये किसी किसी को

डाँट पिलाते है । कभी सब्जीवाले को, कभी मोची को, कभी और किसी को- लूट पड़ी है, लूट लो । जितना मन करता है दाम बढ़ा देते हो । बेईमानी की इन्तहा हो गयी है । इन छोटे छोटे लोगों में ईमान-धरम नाम की कोई चीज बची ही नहीं है । कम्बख्त दो दो पैसे की बेईमानी करते है । ईमान-धरम को भी शरम आती होती । हजारों, लाखों और करोड़ों पर हाथ साफ करों तो ईमान धरम को भी कुछ गौरव अनुभव होता है बल्कि वही ईमान धरम बन जाता है । देश में, दुनिया में बड़े लोगों का यही ईमान धरम बन गया है । नेता उनके साथ है, पुलिस उनके साथ है, न्याय उनके साथ है, समाजिक इज्जत उनके साथ है फिर ईमान धरम को ही कौन से सुरखाव के पर लगे है कि वह उनके साथ न हो । इन सबके लिये पैसा सत्य है वही बड़ा है, शिक्षा, मूल्य सभी दो कौड़ी के - 31

एक सिपाही डॉक्टर सूर्य भी है जो आदमी बिना फीस लिये एक गरीब के एकलौते पोते की दवा नहीं कर सकता, वह समाजवाद का सिपाही बनेगा ? जनता भी जनता के लिये, नेता भी जनता के लिये, उधोगपति भी जनता के लिये, अफसर भी जनता के लिये यानी सभी जनता के लिये संघर्ष कर रहे है । लेकिन यह जनता है कौन ? क्या वह इस भूखी-नंगी जनता से अलग कोई जनता है ? 32

आज जो सभी को ठुकरा कर तिरस्कृत करके अपने पैरो तले रौंदते जाते है । वहीं व्यक्ति समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है । समाज में ऐसे व्यक्ति की ही इज्जत, यश से उसका स्वागत करता है । जो इस नीति व अनीति के पचड़ें में न पड़कर अपने आदर्शो की लकीर को ढोते है । समाज उसे ठोकर मार देता है । "आदिम राग" उप0 में त्रिवेदी अपने मित्र के कहने पर अपने कालेज में त्याग-पत्र देकर उसके कालेज में आया था, उसी प्रिंसीपल की बात का मूल्य दो कोड़ी भी नहीं रह गया । प्रिंसीपल की दृष्टि में वफ़ादारी क्या है, इसे वह जानता था । वफादारी का अर्थ है क्लर्क की तरह आफिस में घिरे रहो, पढ़ाओ कम, पढ़ाने का नाटक अधिक करों, खेलकूद के समय प्रिंसीपल की नाक की सीध में रहो, नाटक-वाटक करों, कूदों-फांदो, पिकनिक की व्यवस्था करों और प्रिंसीपल का जी लुभाने के लिये लतीफे छोड़ो, युनिवर्सिटी-रिजल्ट आये तो बैठकर सप्ताह भर, "रिजल्ट शीट" तैयार करो, कालेज के "डोनेशन" के लिये असामियों को फोड़ो-फांसों और बहुत सी खुली-छिपी बाते है जो कालेज की वफादारी में आती है और यह वफादारी वे

जूनियर अच्छी तरह कर सकते है जिनके लिये कालेज के सिवा और कोई जगह नहीं होती और इस वफादारी के निभाने के सिवा और कोई काम नहीं होता । 33

जब यह सब व्यवस्था करने में त्रिवेदी फिट नहीं होता है तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है । एक मित्र अपने मित्र से अपनापन जता कर उसे यह उपहार देता है ।

ऐसे बहुत कम लोग होगे जो अपने आदर्शों पर अडिग रहते है । "अपने लोग" उप0 व "जल टूटता हुआ" उप0 में प्रमोद व सतीश ऐसे ही व्यक्ति है जो अंत तक आपने आदर्शों से पीछे नहीं हटते है भले ही सतीश को बहुत ही कष्ट उठाने पड़ते है, उसके खेत वगैरह सब छीन लिये जाते है । फिर भी वह महीपसिंह जैसे जमींदारों के चुंगुल में नहीं फंसता है । अपने निश्चय में अडिग रहता है । जबकि "खंडहर की आवाज 'कहानी में गुरू जी इतने आदर्शवादी होते हुए भी पैसों की लालच में पड़कर सभी आदर्श व मूल्यों को छोड़ देते है । जिस राजनीति से वह नफरत करते थे । उसी राजनीति में फंसकर वे कांग्रेसी हो गये ।

मिश्र जी ने मूल्यवान व मूल्यहीन दोनों प्रकार के व्यक्ति के रूप बताते हुए यथार्थ में हो रहे मूल्य परिवर्तन को बताया है । इन सबका कारण क्या है जो मूल्य टूट रहे है या परिवर्तित हो रहे है या उनके बदले नये मूल्यों का निर्माण हो रहा है । आज मूल्यों के टूटने या बदलने का एक मुख्य कारण मंहगाई, बेकारी, तथा बढ़ती हुई जनसंख्या है । आज दुनिया इस तेजी की रफ्तार से चल रही है । जिसमें जो साथ साथ न चलें वह दुनिया की होड़ में पीछे छूट जाता है । और उसका संसार व्यर्थहीन हो जाता है । आज सभी क्षेत्रों का रूख बदल रहा है, या बदल गया । समाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, आर्थिक तथा यहां तक नैतिकता में भी गिरावट आ गयी है । समाजिक क्षेत्र में जैसे जिस व्यक्ति में पैसा, इज्जत, शोहरत हो तो वह चाहे तो चीज को खरीद सकता है । बदल सकता है । दुनिया की कोई भी ताकत उसका विरोध नहीं कर सकती है । वह अपनी ताकत का इस्तेमाल गरीब, बेबस तथा लाचार लोगों पर ही करता है । न्याय के क्षेत्र में भी वह मुजरिम होते हुए भी बेकसूर तथा बेकसूरवार को मुजरिम साबित कर सकता है । उसके लिये मानवीय रिश्ते, जज्बात सब बेकार की फिजूल बातें है ।

राजनीति में तो सभी मूल्यों का विघटन ही होता जा रहा है । जो कुछ गलत कार्य किया जाता है उसे राजनीति का नाम दिया जाता है । उसी के नशे में, उसको प्राप्त करने की लालसा में वह सभी को रौंदता हुआ चलता ही जाता है । नेता लोग स्वंय गलत कार्य करते हुए बड़े बड़े आदर्शों की बाते करते है। वे बेबस जनता के अधिकारों के वोट चंद सिक्कों, में, या जुर्म कराके, जबरदस्ती हासिल करते है । प्रजातंत्र तो केवल नाममात्र ही रह गया है । प्रजा का शासन तो कहीं है ही नहीं, शासन है बोल वालों का जो बड़ी बड़ी बातें व आश्वासनों से जनता के हृदय को ठगते है । वे भला मूल्यों की स्थापना क्या करेगें ।

शिक्षा के क्षेत्र में भी शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है । शिक्षाणं संस्थान भी राजनीति से जुड़ा हुआ है । जो लोग सही रूप से शिक्षा प्राप्त किये हुए है । वे तो अपनी डिग्री को लिये गली गली फिर रहे है । उनकी योग्यता के मूल्य को नहीं आकां जाता बल्कि कालेजों में गुंडा-गर्दी करने वालें को फर्स्ट क्लास दे दिया जाता है । ऐसे लोग अयोग्य होते भी चमचागिरी जी हजूरी करके नौकरी भी प्राप्त कर लेते है । गरीब आदर्श व्यक्ति नैतिकता का पालन करते करते अपने को ही होम कर देते है ।

धार्मिक क्षेत्र में भी जो ज्यादा-चढ़ावा देगा पंडित जी उनके लिये शुभाषिश देंगे । जो केवल छल्ला दिखायेगा उसके लिये शुभ बचन भी नहीं निकलते है । मंदिर जैसे पवित्र स्थानों पर भी स्मगलिंग, मूर्ति चोरी जैसे भ्रष्ट कार्य होते है । पुजारीजी स्वयं गलत आचरण करते हुए पकड़े, जाते है । भगवान के नाम पर लोग निरीह धर्म परायणता लोगों को लूटते है ।

आर्थिक क्षेत्र में तो मूल्यों का हास सबसे ज्यादा दिखायी पड़ता है । क्योंकि इसका मूल कारण अर्थाभाव ही है । इसकी प्राप्ति के लिये लोग पवित्रता, आदर्शों से गिरते है । इसके बिना जिंदगी में जिया नहीं जा सकता है । इसके लिये लोग नैतिकता का लबादा उतार कर चाहे जिस ढंग से भी अर्थ को पाना चाहता है । सभी प्रकार के गोरख धंधे इसी क्षेत्र के लिये होते है । इसी को पाने के लिये भाई-भाई का, बाप बेटे का सभी रिश्ते-नाते का खून होता है । जिसके पास पैसा है, वहीं सब कुछ है । आज की दुनिया में पैसा ही भगवान है । बाकी सब बेकार है ।

इतना सब होते हुए भी लगता है दुनिया अभी खत्म नहीं हुई है । कुछ

अच्छे अंश मानव-मानव में बाकी बचा है । कुछ परोपकारी लोग आज भी इस दुनिया में रहते है । जो मानव का ह्रास होते नहीं देख सकते हैं । इंसानी लहु-लहु को पुकारता है । इसी संवेदना के कारण ही मानव को मानव कहा जाता है । वरना मनुष्य व पशु में फर्क ही क्या रह जायेगा । एक बुद्धि, विवेक, हृदयता के कारण ही वह पशु से भिन्न है ।

अत: मनुष्य को अपने कर्तव्य-पथ से डिगना नहीं चाहिये । एक दूसरे के दुख-दर्द में शामिल होना चाहिये । जो दूसरों का हित देखता है । भगवान उसकी भलाई करता है । "कर भला तो हो भला" यह बात को सदैव ध्यान में रखनी चाहिये ।

सन्दर्भ सूची

01) हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग पृ0 - 240, 319

03) द्विवेदी युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन पृ0 - 14, 14

05) द्विवेदी युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन पृ0 - 14, 14

07) हिन्दी उपन्यास का शिल्पगत विकास पृ0 - 103

08) चिट्ठियों के बीच कहानी पृ0 - 201

09) एक अटकी हुई मुलाकात कहानी पृ0 - 177

10) पराया शहर कहानी पृ0 - 270

11) पड़ोसिन कहानी पृ0 - 46

12) पशुओं के बीच कहानी पृ0 - 133

13) जल टूटता हुआ उपन्यास पृ0 - 511

14) अपने लोग उपन्यास पृ0 - 02

15) पानी के प्राचीर उपन्यास पृ0 - 47

16) पड़ोसन कहानी पृ0 - 47

17) बिना दरवाजे का मकान उपन्यास पृ0 - 20

18) आकाश की छत उपन्यास पृ0 -52

19) सूखा हुआ तालाब उपन्यास पृ0 - 90

20) हद से हद तक कहानी पृ0 - 502

21) रात का सफर उपन्यास पृ0 - 18

22) जल टूटता हुआ उपन्यास पृ0 - 262

23) अपने लोग उपन्यास पृ0 - 59

24) एक रात कहानी पृ0 - 65

25) अपने लोग उपन्यास पृ0 - 306

26) पानी के प्राचीर उपन्यास पृ0 - 209, 110

28) पिंजड़ा कहानी पृ0 - 335

29) जल टूटता हुआ उपन्यास पृ0 - 299

30) रात का सफर उपन्यास पृ0 - 34

31) बेला मर गयी कहानी पृ0 - 68

32) पड़ोसन कहानी पृ0 - 45

33) सूखा हुआ तालाब उपन्यास पृ0 - 29